

## प्रगति पथ पर बंगला देश

—संत समीर

प्रतिष्ठित पत्रकार और समाज-कर्मि

पं. क्षितीश कुमार वेदालंकार इस संसार में यदि आज होते तो पूरा न सही, पर कुछ सुकून जरूर महसूस करते कि जिस बंगला देश को वे भूख, गरीबी, बेकारी, भ्रष्टाचार और सांप्रदायिक संकीर्णता के एक ऐसे घटाटोप से घिरा देखकर आए थे, जिसके छूटने की दूर-दूर तक कहीं कोई उम्मीद नहीं दिखाई दे रही थी, आज वही बंगला देश कुछ किंतु-परंतुओं के साथ इतिहास के पन्नों में विकास की नई इबारत लिख रहा है। सन् 1975 में जब क्षितीश जी ने बंगला देश की यात्रा की और 'बंगला देश: स्वतंत्रता के बाद' पुस्तक लिखी तो उस वक्त तक भी पाकिस्तान के किए-धरे का दंश यह देश भुगत रहा था। शेख मुजीब के राष्ट्र-निर्माण के किए गए आधे-अधूरे प्रयास लगभग पूरी तरह दम तोड़ चुके थे या आपसी रंजिश की राजनीति की भेंट चढ़ते हुए दिखाई दे रहे थे। मुजीब जैसे किंकर्तव्यविमूढ़ थे। क्षितीश जी के वर्णनों से वे कारण साफ समझ में आते हैं कि आखिर क्यों बंगबंधु बंगला देश को एक स्वतंत्र राष्ट्र का रूप देने में कामयाबी हासिल करने के बावजूद राष्ट्र-निर्माण का कोई सुनहरा अध्याय नहीं लिख सके। आत्ममुग्धता के शिकार बंगबंधु खुशखयाली में कुछ यों पड़े रहे कि उनकी नाक के नीचे उनके सिपहसालारों से लेकर रिश्तों के रिश्ते तक भ्रष्टाचार में आकंठ डूब चुके थे, देश को खोखला कर रहे थे और उन्हें खबर होकर भी जैसे खबर नहीं थी।

आखिरकार वह समय आया, जब बंगबंधु को संभवतः एहसास होना शुरू हुआ कि देश की जिस युवा शक्ति को उन्होंने लगभग बिसरा दिया था, बिना उसके सहयोग के 'सोनार बंगला' के निर्माण का सपना साकार नहीं हो सकता। सो, 15 अगस्त, 1975 को सवेरे 10 बजे उन्होंने ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों को संबोधित करने का कार्यक्रम तय किया। इस समाचार से छात्र आह्लादित थे और उनकी अगवानी के लिए पूरे उत्साह से तैयारियाँ करने में लगे थे। आखिर उनकी प्रेरणा का सबसे बड़ा केंद्र उनकी ओर एक बार फिर उम्मीद भरी निगाहों से देख जो रहा था। देश की विषम परिस्थितियों का यथार्थ-दर्शक छात्रों से

बेहतर और कौन हो सकता था और इसीलिए अब छात्र भी शायद बंगबंधु के नेतृत्व में किसी नई दिशा की तलाश में थे।

लेकिन, 15 अगस्त का सूरज बंगला देश के आसमान में रक्तरंजित संदेशों के साथ उगा।

शेख मुजीब को उनके पूरे परिवार के साथ उनके आवास पर ही बेरहमी से कत्ल कर दिया गया। नाते-रिश्ते वालों को भी ढूँढ़-ढूँढ़कर मारा गया। मुजीब की बड़ी और छोटी बेटियाँ यूरोप में थीं तो बस वे ही दो बच गईं। बंगबंधु के कुछ निकट सहयोगी जेल भेज दिए गए, पर विरोधियों को इतने से संतोष नहीं हुआ तो भविष्य के किसी खतरे से बचने के लिए कुछ दिनों बाद जेल के भीतर जाकर उन्हें भी मौत के घाट उतार दिया गया। इस पूरे कांड को पाकिस्तान ने 'इस्लामिक क्रांति' की संज्ञा दी। समझना कठिन नहीं है कि भारत के सगे माने जाने वाले शेख मुजीब के अंत की पटकथा लिखने में मुजीब विरोधियों का किसने, कितना और किस तरह साथ दिया होगा।

क्षितीश जी धुन के अजब धनी थे। जब शेख मुजीब ने 28 दिसंबर, 1974 को देश की बिगड़ी हालत को सँभालने की खातिर आपात्काल की घोषणा की तो 29 दिसंबर के समाचार पत्रों में इसकी खबर पढ़ते ही क्षितीश जी ने भी सन् 1968 में देखे अपने सपने का पीछा करने के लिए बंगला देश जाने का मन बना लिया। मित्रों ने लाख मना किया कि इस समय बंगला देश में कदम रखना खतरे से खाली नहीं है, पर खतरे का खिलाड़ी यह पत्रकार बंगला देश को उड़ चला। राजधानी ढाका में कदम रखने के बाद का पूरा वर्णन दिल थामकर पढ़ने की चीज है। क्षितीश जी की लेखनी का जादू है कि इतिहास के संक्षिप्त प्रसंग भी जैसे जीवंत बन गए हैं। उदाहरण के लिए इतिहास और वर्तमान के मेल का एक संक्षिप्त रोचक वर्णन कुछ यों है—

“प्रवर्तक संघ केवल चटगाँव के लिए ही नहीं, सारे बंगला देश के लिए गौरव की वस्तु है।...बहुमुखी गतिविधियों से समन्वित इस विशाल संस्था की संचालिका हैं दो तरुणियाँ—कुमारी मीरा सिन्हा और कुमारी झरना चौधरी—जिन्होंने जनता की सेवा के लिए आजन्म कौमार्यव्रत धारण किया हुआ है।

इन दोनों तरुणियों को देखकर मुझे बंगभूमि की उस वीर-सुता शहीद प्रीतिलता का स्मरण आए बिना नहीं रहा, जिसने सत्रह साल की उस कोमल वय में, जब लड़कियाँ अपने हाथों में मेहँदी रचाने का स्वप्न देखती हैं और माता-पिता अपनी कन्याओं के हाथ पीले करने को आतुर हो उठते हैं, अनेक अँग्रेजों को अपनी पिस्तौल की गोली का निशाना बनाया था और अंत में अपने

शील की रक्षा के लिए पोटेशियम साइनाइड खाकर 24 सितंबर, 1932 को देश की बलिवेदी पर शहीद हो गई थी।”

वास्तव में बंगला देश की उस समय की हालत का इससे बेहतर प्रामाणिक और मार्मिक वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। क्षितीश जी की दृष्टि छोटी से छोटी चीज पर भी रही है। कई जानकारीयाँ उन्होंने जान जोखिम में डाल कर हासिल कीं। बंगला देश के आत्म को ठीक से समझना हो तो आज भी बगैर इस पुस्तक से होकर गुजरे बात बननी मुश्किल है। विधा के तौर पर ‘बंगला देश : स्वतंत्रता के बाद’ न उपन्यास है, न संस्मरण और न ही पूरी तरह यात्रा-वृत्तांत, पर इसे पढ़ते हुए पाठक दृश्यों, विवरणों में जिस तरह से बँध-सा जाता है, वह किसी किस्सागोई और औपन्यासिक आस्वाद से कम नहीं। भूमिका के अलावा 14 अध्यायों में विभाजित यह पुस्तक बंगला देश की व्यथा-कथा के साथ-साथ समूची बंगभूमि की गौरवगाथा के कुछ जरूरी अध्यायों का एक तरह से पुनःपाठ भी है।

शेख मुजीब की हत्या के बाद बंगला देश फौज के कब्जे में जा पहुँचा और अराजकता का एक नया दौर शुरू हो गया। पाकिस्तान अपना वर्चस्व स्थापित करने को उतावला था। ढाका स्थित भारतीय दूतावास में बम रखा गया, पर विस्फोट की योजना विफल हो गई। इसके हफ्ते भर बाद ही भारतीय उच्चायुक्त समर सेन को गोलियों का निशाना बनाने की कोशिश की गई। सेन के कंधों में गोली लगी और वहाँ की हड्डी टूट गई। अगले दिन भारतीय वायुसेना का विमान उन्हें लेने पहुँचा, पर समर सेन ने ढाका में ही डटे रहने की हिम्मत दिखाई। बंगला देश को अराजकता से बाहर निकालने की यह भारतीय मंशा थी और इसका नतीजा कालांतर में दिखाई भी देना शुरू हुआ। बंगला देश की जो जनता अराजकता और गृहयुद्ध की लपटों से घिरती जा रही थी, उसके लिए दूर कहीं क्षितिज पर उम्मीद की किरणें शांति का आलोक बिखरने को फूटने ही वाली थीं।

जैसे कोई दैवीय विधान का अंग हो कि बंगला देश के जन्मदाता बंगबंधु की दो बेटियाँ, शेख हसीना और रेहाना, आततायियों के चंगुल में आने से बच गई थीं। बड़ी बेटी शेख हसीना ने भारत में शरण ली और यहाँ रहते हुए बंगला देश में लोकशाही लाने का आंदोलन चलाती रहीं। उनकी मेहनत रंग लाई और सन् 1996 के चुनावों में विजय हासिल करके देश की प्रधानमंत्री बनीं। कई वर्षों के शासन के बाद उन्हें विपक्ष में भी बैठना पड़ा, पर आज फिर से बंगला देश की बागडोर उनके हाथ में है। भारत के प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग के

बूते शेख हसीना ने बंगला देश को गरीबी और अराजकता के दलदल से बाहर निकालने में काफी हद तक कामयाबी पाई है। उद्योग-धंधों से लेकर सुरक्षा तक में भारत का सहयोग बंगला देश को समय-समय पर मिलता रहा है। दोनों देशों के बीच व्यापार की स्थिति काफी बेहतर हुई है। पड़ोस-धर्म निभाने में पाकिस्तान आज भी अड़ंगे डालने की कोशिशों में लगा रहता है, पर बंगला देश के कर्मठ युवाओं का एक बड़ा वर्ग 'सोनार बंगला' के सपने के साथ आज भी मुस्तैदी से लगा हुआ है।

भूमिका की पहली पंक्ति में इसीलिए मैंने कहा कि क्षितीश जी आज इस संसार में हमारे बीच होते तो कुछ सुकून जरूर महसूस करते कि बंगला देश ने गहरी नाउम्मीदी के अंधकूप से बाहर निकलकर राष्ट्र के नवनिर्माण की कुछ स्थायी-सी लगती रेखाएँ खींची तो हैं। विकास के पथ पर पाकिस्तान को बंगला देश के उद्यमियों ने मीलों पीछे छोड़ दिया है। छोटे-से बंगला देश की अर्थव्यवस्था आज पाकिस्तान से कई गुना बड़ी हो गई है। आबादी और गरीबी से जूझते बंगला देश को विश्लेषक अब एशिया का 'अगला टाइगर' के रूप में देखने लगे हैं। कोरोना काल से पहले पाकिस्तान की जीडीपी 5.8 प्रतिशत पर अटकी पड़ी थी, तो बंगला देश की जीडीपी 7.8 प्रतिशत पर पहुँच चुकी थी। इतिहास में रुचि रखने वालों को याद होगा कि अखंड भारत का ढाका ही वह स्थान है, जहाँ कुछ शताब्दियों पहले संसार का सबसे उम्दा कपड़ा बनता था। ढाका की मलमल की प्रसिद्धि का बयान करने की जरूरत नहीं है। कहा जाता है कि माचिस की एक डिबिया में 21 थान ढाका की मलमल तह-तह करके समा जाती थी। औरंगजेब की बेटी ढाका की मलमल ही पहन कर एक बार दरबार में आ पहुँची तो बादशाह को भ्रम हुआ कि कहीं वह निर्वस्त्र तो नहीं है। दो सौ साल तक धरती पर सबसे कीमती कपड़ा यह बना रहा। सारे संसार में ढाका की मलमल को हसरत भरी निगाहों से देखा जाता था। अंग्रेजी राज ने सब कुछ बरबाद कर दिया। शेख हसीना ने इतिहास की इस विरासत को पहचाना और अपने लोगों की क्षमता पर भरोसा करते हुए कपड़ा उद्योग को सँवारने का बीड़ा उठाया। नतीजा बेहतर आया और जल्दी ही बंगला देश का कपड़ा उद्योग संसार में अपना परचम लहराने लगा। मेघना नदी के किनारे पैदा होने वाले ढाका की मलमल वाले कपास की उस ऐतिहासिक गुणवत्ता को हासिल करने की कोशिशें एक बार फिर से की जा रही हैं।

बंगला देश को सँवारने में वहाँ के गैर सरकारी संगठनों का भी बड़ा योगदान है, जिन्हें कि शेख हसीना की सरकार ने आजादी के साथ काम करने का अवसर

दिया है। हेल्थ केयर, स्कूल, बैंक, डेयरी उद्योग आदि में बंगला देश की आज की तस्वीर की दो दशक पहले से तुलना करें तो आमूल परिवर्तन आ चुका है। बीच के कुछेक समयों पर पाकिस्तान समर्थक अराजक तत्त्वों और धर्मांधों ने अराजकता फैलाने की कोशिशें जरूर कीं, पर बंगला देश प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर है, जबकि पाकिस्तान लगातार अराजकता का शिकार बनता जा रहा है। जो बंगला देश कुछ साल पहले तक बदहाल, पामाल देशों की सूची में गिना जाता था, आज वह एशिया के 13 सबसे गरीब देशों की सूची से बाहर आ चुका है, जबकि पाकिस्तान इस सूची में 8वें और भारत 13वें स्थान पर बने हुए हैं। कोरोना काल के प्रारंभ में देशों का लेखा-जोखा इकट्ठा किया गया तो आश्चर्यजनक रूप से यह पता चला कि बंगला देश में प्रति व्यक्ति आय पाकिस्तान ही नहीं, भारत से भी आगे पहुँच चुकी है। दो साल पहले के आँकड़ों के अनुसार पाकिस्तान की प्रति व्यक्ति सालाना आय 1193.73 डॉलर और भारत की 1900.71 डॉलर थी, जबकि बंगला देश की प्रति व्यक्ति सालाना आय 1968 डॉलर हो चुकी थी। यह बात अलग है कि भारत से तुलना करने पर कुछ विशेषज्ञ बंगला देश के आँकड़ों को आश्चर्यजनक मानते हुए उन पर अविश्वास जताते हैं, पर यह सच है कि कई मोर्चों पर बंगला देश ने विकास के रास्ते में वह लकीर खींची है, जिसके सामने पाकिस्तान दूर-दूर तक कहीं नहीं टिकता। नार्वे के सामाजिक कार्यकर्ता आरिक जी. यानसन अपना अनुभव बताते हैं कि लगभग 35 साल बाद 2009 में वे बंगला देश के एक गाँव में दुबारा पहुँचे, तो उन्हें वहाँ के सामाजिक-आर्थिक विकास और लोगों की आय में असाधारण बढ़ोतरी देखकर हैरानी हुई। उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि बंगला देश के लोगों की आय दस गुना बढ़ चुकी थी। एक समय वह भी था, जब इस देश के लोग एक जून के चावल के लिए भीख माँगते देखे जाते थे, पर वे ही लोग अपनी दिहाड़ी से 10-15 किलो चावल खरीद सकते थे।

कोरोना काल में बंगला देश की हालत एक बार फिर खस्ता होने की आशंका जताई गई थी, क्योंकि कपड़ा उद्योग का बंगला देश का निर्यात ठप पड़ गया था और निर्यात की तुलना में आयात बढ़ने से विदेशी मुद्रा का भंडार तेजी से खाली होने लगा था। आशंका थी कि कहीं बंगला देश का हाल भी श्रीलंका जैसा न हो जाए, पर विश्लेषकों की आशंका को इस देश ने झूठा साबित करते हुए अपनी अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाने में कामयाबी पा ली है और प्रगति पथ पर आगे बढ़ चला है। और तो और, 25 जून, 2022 को प्रधानमंत्री शेख हसीना ने पद्मा नदी पर 6.15 किमी लंबे रेल-रोड पुल का उद्घाटन कर

बंगला देश के विकास पथ पर अब तक का सबसे बड़ा अजूबा कर दिखाया है। पाकिस्तान के आततायी पंजों से छूटने के बाद बंगला देश में यह अब तक का सबसे बड़ा इनफ्रास्ट्रक्चर प्रॉजेक्ट है। लगभग 3.9 अरब डॉलर की लागत से इस पुल को बनाने के लिए शेख हसीना ने सबसे पहले विश्वबैंक से आर्थिक मदद माँगी थी। पुराना विरोधी अमेरिका नहीं चाहता था कि ऐसा हो, तो उसने विश्वबैंक पर दबाव डाला कि वह पद्मा ब्रिज प्रॉजेक्ट से हट जाए। ऐसी हालत में शेख हसीना ने चीन से मदद ली और इस काम को पूरा कर दिखाया। इस पुल का निर्माण साल 2015 में शुरू हुआ था और अब जाकर पूरा हुआ है। पद्मा ब्रिज के बनने से अब राजधानी ढाका का सभी दक्षिणी जिलों और देश के दूसरे बंदरगाह मोंगला से संपर्क आसान हो गया है। इससे देश की सालाना जीडीपी में 1.2 प्रतिशत की वृद्धि होगी। अनुमान है कि इस पुल के बनने से अब बंगला देश की अर्थव्यवस्था में 10 अरब डॉलर और जुड़ जाएगा। अनुमान यह भी लगाया जा रहा है कि 409 अरब डॉलर के साथ संसार में अर्थव्यवस्था के 37वें पायदान पर पहुँच चुकी बंगला देश की अर्थव्यवस्था 2030 तक इससे दुगुनी हो जाएगी। दिलचस्प यह भी है कि पद्मा ब्रिज के बनने का सबसे बड़ा फायदा भारत को होने वाला है। हम समझ सकते हैं कि अब कोलकाता से ढाका के बीच की दूरी आधी रह जाएगी। बंगला देश के रास्ते भारत के पूर्वोत्तर के राज्यों तक जाने की दूरी भी काफी सिमट जाएगी। विश्वबैंक का अनुमान है कि इस पुल के बन जाने से बंगला देश और भारत की राष्ट्रीय आय में 8 से 10 फीसदी की वृद्धि होगी और निर्यात भी 182 से 297 फीसदी तक बढ़ जाएगा। बढ़े व्यापार से भारत के अलावा नेपाल, भूटान और म्याँमार को भी बड़ा फायदा होगा। इन्हीं सब वजहों से पश्चिमी देशों के एजेंडे पर चलने वाले एनजीओ नहीं चाहते थे कि बंगला देश इस तरह की किसी महत्वाकांक्षी योजना को कामयाबी के मुकाम तक ले जा पाए। बहरहाल, बड़ी बात है कि बंगला देशी प्रधानमंत्री दबाव में नहीं आईं। उन्होंने इस्लामिक विपक्षी दलों के आगे नहीं झुकने का फैसला करके भी दूरगामी संकेत दिए हैं।

विकास पथ पर अतुलनीय उपलब्धियों की ओर बढ़ते रहने के बावजूद बंगला देश में आज भी अगर कोई बड़ी समस्या रह-रहकर मुँह उठाती रही है तो वह है, अल्पसंख्यक हिंदुओं की सुरक्षा का सवाल। सामान्यतः बंगला देश की जनता का रवैया भारत के साथ सौहार्दपूर्ण है, पर पाकिस्तान समर्थक तत्त्वों ने दोनों देशों के संबंधों में दरार पैदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इस्लाम

की धार्मिक मान्यताएँ दंगे भड़काने में आसानी से सहायक बन जाती हैं। इस साल के शुरुआत के आँकड़े कुछ यों हैं कि बीते 9 साल में 3600 से ज्यादा हमले हिंदू समुदाय पर किए गए। 2014 के चुनावों में अवामी लीग की जीत के बाद हिंदुओं को निशाना बनाकर बड़े पैमाने पर हिंसक घटनाएँ हुईं। इससे स्पष्ट होता है कि यह सब पाकिस्तान समर्थकों की साजिश है, क्योंकि अवामी लीग को भारत का हितैषी समझा जाता है और हिंदुओं का वोट परंपरागत रूप से अवामी लीग के लिए पक्का माना जाता है। गए साल अक्टूबर में दुर्गा पूजा के समय अफवाह फैलाकर पूजा पंडालों, मंदिरों और हिंदू समुदाय के लोगों के घरों पर हमले किए गए, तोड़-फोड़ और आगजनी की गई। छह लोगों की मौत हो गई। बावजूद इसके, भारत सरकार ने तीखी प्रतिक्रिया जताने के बजाय शेख हसीना के उठाए कदमों पर भरोसा जताते हुए यह ध्यान रखा कि पाकिस्तान का मनोबल बेवजह न बढ़ने पाए।

चिंता इस बात की है बंगला देश में कट्टरपंथियों पर प्रभावी लगाम नहीं लग पा रही है। हिंदुओं पर लगातार हमले हो रहे हैं और वे पलायन कर रहे हैं। बंगला देश के जन्म के बाद 1974 में हुई जनगणना के अनुसार तब वहाँ हिंदुओं की आबादी 13.5 प्रतिशत थी, लेकिन वर्ष 2011 में सिर्फ 8.5 प्रतिशत हिंदू बचे थे। एक दशक बाद अब इस संख्या में तीन प्रतिशत और कमी आ चुकी है। हर दिन औसतन 632 लोग बंगला देश छोड़कर जा रहे हैं। शोधकर्ता प्रोफेसर अबुल बरकत का दावा है कि यही हाल रहा तो सन् 2050 तक बंगला देश में एक भी हिंदू परिवार नहीं बचेगा।

बंगला देश की सरकार के लिए असली चुनौती यही है। यदि अल्पसंख्यक वहाँ नहीं बचे तो लोकशाही का बचे रहना भी शायद कठिन होगा। भारत ने साबित किया है कि वह बंगला देश के सुख-दुःख में हमेशा साथ है, पर अब शेख हसीना को साबित करना है कि वे अपनी सूझ-बूझ से बंगला देश में मौजूद भारत और भारतीयता को किस हद तक बचा पाती हैं। बंगला देश को ध्यान रखना होगा कि उसका वजूद अगर बने रहना है तो उसका आधार बंगभूमि की भाषा, सभ्यता होगी, न कि कट्टरपंथियों की थोपी गई जबरदस्ती की भाषा और सभ्यता।